राजस्थान की स्थापत्य कला: भरतपुर जिले के संदर्भ में

[1]पत्ती राम

शोध सारांश

मानव संस्कृति के इतिहास में स्थापत्य कला का अपना स्वतंत्र स्थान रहा है। भारतीय धरा स्थापत्य कला की दृष्टि से संसार भर में विख्यात है। इसका मुख्य कारण भारतीय संस्कृति के द्वारा विदेशी संस्कृतियों को अपनी गोद में स्थान देना रहा है। यही कारण है कि भारतीय स्थापत्य कला में विभिन्न स्थापत्य कलाओं का बेजोड़ मिश्रण पाया जाता है।

भारतीय स्थापत्य कला अतिप्राचीन है। जिसके निशान हड़प्पा सभ्यता के शहरों में दिखाई देते हैं। जिससे नगरीयकरण की अनोखी शैली की विलक्षण जानकारी मिलती है जो कालांतर में हिंदू, बौद्ध, जैन, फारसी और पाष्चात्य शैलियों से लगातार अपना स्वरूप बदलती रही। यही कारण है कि विभिन्न शैलियों के मिश्रण से भारतीय स्थापत्य कला विलक्षण स्वरूप में निखर गई। भारत में राजस्थान की स्थापत्य कला की बात करे तो राजस्थान की स्थापत्य कला के विकास चिह्न राजस्थान की प्राचीन इतिहास और सभ्यताओं एवं संस्कृतियों कालीबंगा, गणेष्वर, आहड़ और नोह आदि संस्कृतियों में दिखाई देते हैं। राजस्थान की स्थापत्य कला में राजपूतों का मुख्य स्थान रहा है जिन्होंने रक्षा, वीरता के प्रतीक किलों, मंदिरों, राजप्रसादों, जलमहलों, उद्यानों, समाधियों और छतरियों का निर्माण करवाया। कालांतर में राजपूतों का मुगलों से संबंध स्थापित होने के कारण मुगल स्थापत्य कला के संगम ने राजस्थानी स्थापत्य कला को विशिष्ट बना दिया।

मुल शब्द:- राजस्थान, भरतपुर, स्थापत्य कला, सौंदर्य,

Corresponding editor

सहायक आचार्य: इतिहास, राजकीय कन्या महाविद्यालय, नोहर, हनुमानगढ़ e mail pattiram806@gmail.com

प्रस्तावना

स्थापत्य कला का अर्थ:- ‘‘वास्तु कला भी होता है। वास्तु शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के वस् धातु से हुई है जिसका अर्थ बसना होता है। भवन निर्माण आदि होता है। ‘1

अर्थात् स्थापत्य कला कोई नई कला नहीं बल्कि इसका जन्म तभी हो चुका था जब आदिम मानव ने अपनी सुरक्षा और रहने के लिए गुफाओं में आश्रय बनाना शुरू किया। मनुष्य जंगलों के प्राकृतिक निवास से निकला तब उसने अपने लिए घर बनाना शुरू किया। कालांतर में जैसे-जैसे मानव को सौंदर्य को बोध होता गया उसने अपनी पसंद के अनुसार कलात्मक और आकर्षक मकान बनाना शुरू किया। आवश्यकता, कल्पना, सामग्री, कौशल, स्थान और बनाने वालों की क्षमताओं के संगम से वास्तुकला का जन्म हुआ।

महत्व - जिस प्रकार हम लिपिबद्ध साधनों से इतिहास का निर्माण करते हैं उसी प्रकार स्थापत्य एवं चित्रकला के साधनों से इतिहास के सांस्कृतिक पक्ष का निर्माण कर सकते हैं। स्थापत्य साधनों में दुर्ग, राजप्रासाद, सार्वजनिक भवन, राजाओं की समाधि, मंदिर और मूर्तियाँ, जलाशय आदि आते हैं। ‘ ‘

उद्देष्य:-

1. स्थापत्य कला की जानकारी

2. राजस्थान में स्थापत्य कला का स्वरूप एवं विकास की जानकारी

3. भरतपुर की स्थापत्य कला के संबंध में जानकारी प्राप्त करना।

4. प्राचीन स्थापत्य कला की तकनीक और पद्धतियों की जानकारी

5. राजस्थान की मूल स्थापत्य शैली अन्य स्थापत्य कलाओं के प्रभाव की जानकारी

राजस्थान की स्थापत्य कला का विकास एवं स्वरूप:-

राजस्थान में स्थापत्य कला का इतिहास मानवीय इतिहास की भाँति अति प्राचीन है। राजस्थान में स्थापत्य कला के पद-चिह्न इतिहास, सभ्यता और संस्कृति में दिखाई पड़ते हैं। जिस समय भारत के विभिन्न भागों में प्राचीन सभ्यताऐं विकसित हो रही थी, उसी काल खण्ड में राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में भी एक समृद्ध सभ्यता विकसित हो रही थी। जिसमें कालीबंगा, आहड़, गणेष्वर, नोह आदि।

इस प्रकार भारत में मुस्लिमों के आगमन से पूर्व ही एक शैली विकसित हो चुकी थी। ‘ ‘ इस स्थापत्य के प्रमुख लक्षण शिल्प-सौष्ठव तथा अलंकृत पद्धति और विषयों की विविधता थी। यह हिंदू स्थापत्य शैली कहलाती थी। ‘ ‘2

जिनमें कालीबंगा, गणेष्वर, आहड़ नोह आदि। यद्यपि कालीबंगा हड़प्पा संस्कृति से भी प्राचीन थी जो एक विषेष शैली के अनुरूप निर्मित हुई जिसमें बाद में हड़प्पा और स्थानीय विषेषताओं का समन्वय हो गया। कालीबंगा की नगर-योजना सैंधव सभ्यता की भाँति विकसित और समृद्ध दिखाई देती है। जिससे पता चलता है कि राजस्थान की स्थापत्य कला उन्नत थी। जो कालांतर में बौद्ध, जैन और राजपूत शैलियों से यह निखरती गई। चँूकि राजस्थान में राजपूत शासकों में साहस, शौर्यता एवं धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा थी। उन्होंने सामरिक, प्रषासनिक एवं सुरक्षा की दृष्टि से दुर्गों का निर्माण करवाया वहीं धर्म में अगाध श्रद्धा के कारण मंदिरों का निर्माण करवाया। दुर्ग निर्माण में दुर्ग-निर्माण कला की परंपरा का निर्वाह किया जाता था। मुसलमानों के आने से पूर्व नगर-निर्माण की स्थापत्य कला का प्रमुख आधार ‘‘महाभारत, अर्थशास्त्र, कामसूत्र, वास्तु शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र आदि ग्रंथों में दिये गये सिद्धांतों के अनुरूप था। नगरों को परकोटों तथा खाइयों से सुरक्षित रखने पर बल दिया जाता था और नगर की बस्तियों को पेशे के अनुसार विभाजित किया जाता था। ‘ ‘3

भारत में मुस्लिमों के आगमन के पश्चात् नगर-योजना और दुर्ग-निर्माण कला में एक नया मोड़ आया। शासकों ने प्राचीन दुर्गों को मध्ययुगीन युद्ध शैली को ध्यान में रखकर परिवर्तन किया।

राजस्थान में मुस्लिम सत्ता और राजपूत-मुस्लिम मैत्री के पश्चात् राजस्थान की स्थापत्य कला में राजपूत और मुस्लिम कला का पारस्परिक मिलन हुआ जिससे हिंदू एवं मुस्लिम स्थापत्य शैलियों का समन्वय हुआ। दोनों शैलियों के समन्वय से राजस्थानी स्थापत्य कला का रूप निखर आया।

राजस्थानी स्थापत्य कला की प्रमुख विषेषताऐं:-

1. प्राचीन स्थापत्य:- राजस्थान की स्थापत्य कला भी भारत की स्थापत्य कला के समान अति प्राचीन है। यहां की कालीबंगा सभ्यता में सिंधु घाटी सभ्यता की स्थापत्य कला से मिलते-जुलते साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार मौर्य काल की सभ्यता के प्रतीक बैराठ में प्राप्त होते हैं।

2. सौष्ठव और अलंकृत पद्धति:- राजस्थानी स्थापत्य कला की मुख्य विशेषता सौष्ठव और अलंकृत पद्धति है।

3. विषयों की विविधता:- राजस्थानी स्थापत्य कला में शासकों- शासितों की विचारधारा, अनुभूतियों और उद्देष्यों की जानकारी प्राप्त होती है।

4. राजस्थान में राजपूत प्रमुख स्थापत्य कला के आधार - चूँकि राजस्थान राजपूत शासकों की वीरता और गाथा का इतिहास रहा है। राजपूतों के कारण संपूर्ण राजस्थान मंदिरों, किलों, राजप्रासादों, हवेलियों, छतरियों और जलाषयों से भर गया है।

5. हिंदू व मुस्लिम स्थापत्य का समन्वय:- मुस्लिमों के आगमन और सत्ता प्राप्ति एवं मैत्री के पश्चात् राजस्थानी स्थापत्य कला हिंदू-मुस्लिम कला के समन्वय का प्रतीक बन गई।

स्थापत्य कला की दृष्टि से भरतपुर एक अवलोकन:-

भरतपुर का इतिहास लगभग 5 सांस्कृतिक युगों का साक्षी रहा है- ताम्रयुगीन, आर्ययुगीन, महाभारत युगीन, लौहयुगीन सभ्यता, रियासत कालीन। इन सभ्यताओं और युगों के साक्ष्य इस बात को सिद्ध करते हैं कि भरतपुर का इतिहास अति प्राचीन है जिसमें स्थापत्य कला ने निरंतर गति पाई है। यहाँ राजपूत, जाट एवं मुगल शासकों के सत्ता परिवर्तन से स्थापत्य कला का अनोखा संगम देखने को मिला है। जिनका संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत करते हैं -

लक्ष्मण मंदिर - भरतपुर शहर के बीचों-बीच स्थित राजस्थानी शैली की वास्तुकला से निर्मित मंदिर है जिसमें गुलाबी जालीदार पत्थरों पर की गई नक्काशी हृदय को छू लेती है। इसके स्तंभों मेहराबों पर फूल पत्तियों की सुंदर नक्काशी आकर्षित करती है। इसका निर्माण महाराजा बलदेव सिंह ने करवाया था।

गंगा मंदिर:- महाराजा बलवंत सिंह द्वारा निर्मित दो मंजिला यह मंदिर राजपूत, मुगल तथा द्रविड़ शैली का सुदृढ़ मिश्रण4 जो 84 स्तंभांे पर टिकी हुई है। मंदिर के सामने का हिस्सा मुगल शैली तथा पीछे का हिस्सा बौद्ध शैली में निर्मित प्रतीत होता है। 1937 में महाराजा बलवंत सिंह के वंशज महाराज ब्रजेंद्र सिंह ने गंगा मैया की सुंदर मूर्ति प्रतिष्ठित करवाई।5

उषा मंदिर:- यह मंदिर बयाना के किले में स्थित है जिसकी स्थापना बाणासुर ने करवाई थी। लाल पत्थरों के विशाल खंभों पर खड़े इस मंदिर का जीर्णोद्धार 936 ई. में लक्ष्मण सेन की रानी चित्रलेखा और पुत्री मंगलाराज ने करवाया था। बाद में मुस्लिम आक्रमणकारियों ने तुड़वाकर उषा मस्जिद का रूप दे दिया।

लोहागढ़ दुर्ग:- मुगलों व अंग्रेजों के विरूद्ध यह जाट शासकों के शौर्य और पराक्रम का साक्षी दुर्ग। यथा नाम तथा गुण पर आधारित अजेयी किला अपनी स्थापत्य कला के कारण में इतिहास में अमर है। इसकी स्थापना सूरजमल ने अन्य दुर्गों की खामियों से सबक लेकर निर्मित करवाया। इस किले पर तोप के शोले भी बेअसर रहे और सुरक्षा चक्र को भेदने में नाकाम रहे।

यह दुर्ग तराशे हुए पत्थरों से बना है। जिसकी बाह्य दीवार चैड़ी व मिट्टी की बनी हुई है। इसके उत्तरी द्वार पर लगे दरवाजे अष्टधातु से निर्मित है। इसके चारों ओर गहरी खाई है।

डीग का किला:- "राजा बदन सिंह द्वारा स्थापित किला जो मुगल शैली से बनाये गये बगीचों, फलों के पौधे व फव्वारों के कारण विशेष आकर्षण पैदा करता है। ' '6 इतिहासकार फग्र्यूसन ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री आॅफ इण्डियन एण्ड ईस्टर्न आर्कीटेकर ' ' में इसकी स्थापत्य कला के नमूनों को उत्कृष्ट कोटि का बताया है।

निष्कर्ष:-

भरतपुर में भी राजस्थान के अन्य क्षेत्रों में पनपी प्राचीन सभ्यता के निषान पाये जाते हैं। यहाँ ताम्रयुगीन सभ्यता, महाभारत काल, कुषाण एवं मौर्ययुगीन अवशेष पाये जाते हैं। जिसके कारण इसका महत्व बढ़ जाता है। यहाँ की स्थापत्य कला में भी राजपूत, मुगल, द्रविड़, बौद्ध शैली का आश्चर्यजनक मिश्रण पाया जाता है। यही कारण है कि भरतपुर पर्यटकों के लिए आकर्षण केंद्र रहता है। यहाँ के स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरणों में लोहागढ़ का अजेयी किला, डीग महल, लक्ष्मण मंदिर, उषा मंदिर, भरतपुर किला, गंगा मंदिर आदि है जो अपनी मिश्रित स्थापत्य कला के कारण आकर्षण का केंद्र बने हुए है। यह क्षेत्र संपूर्ण राजस्थान में एकमात्र जाट शासकों के शौर्य, साहस और संघर्ष की कहानी बयान करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. श्रीवास्तव, के.सी., प्राचीन भारत का इतिहास, युनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ. 25

2. राजस्थान का इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ. 37

शर्मा व्यास " राजस्थान का इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ. 277

3. वही

4. नीरज शर्मा ‘‘राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा ‘ ‘ राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ. 35

5. राजस्थान सरकार के पर्यटक विभाग वेबसाइट (भरतपुर जिला)

6. वही